विभाजन से पहले और बाद में

लकीर खींच कर अंग्रेजों ने, एक देश के टुकड़े दो कर डाले,
खून की नदियाँ बहने लगीं, लहू से भर गए नाले!
हिन्दु और मुस्लिम के बीच, अंग्रेजों ने बो दिए दुश्मनी के बीज,
किया जुल्म जालिम बँटवारे ने, दिए दुःख दर्द और गम के गीत!

फूटे भाग्य हमारी एकता के, मारी हमको तकदीर ने लातें ही लातें,
किससे कहें? कोई नहीं सुनता, भारत की व्यथा की बातें!
मुसीबतों में फंस गए, सारे के सारे रिश्ते-नाते-नाते,
न जाने कौन कहाँ गया, जिसे जहाँ मौका मिला, वहीं सारे भागे!

मौत पीछे रह गई हम से, हम निकल गए मौत से आगे,
कठिन हुई जब जिन्दगानी, ईश्वर ने दिखाए जीने के रास्ते!
तब आए आगे भाई प्रताप, हमारी मदद के वास्ते,
रहने के कर दिए प्रबंध, मुश्किलों में भी बनाए आड़ा रास्ते!

सोच विचार कर भाई प्रताप ने, निर्णय किए काम के,
भोजन दे दिए दो वक्त के, और दिए दो वक्त के नास्ते!
रोजगार कारोबार दे दिए, उपाय कर दिए व्यापार के,
सुख दे दिए, चैन दे दिए, सुकून दे दिए संसार के!

अब और क्या चाहिए, बोलो देशवासियों,
आओ चलो आज हम सिर झुकाएं उस महान आत्मा के चरणों में!
खड़ा कर दिया जिसने अपने पैरों पे हमें,
और पहुँचाया - खुशहाल इस मुकाम पे हमें!!

-मनीषा यादव
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका
(हिन्दी)

Scanned by CamScanner